NAME OF THE NEWSPAPER नवभारत टाइम्स DATE: 16 MAR 2013

हिलती-डुलती पॉलिसी

विदेश नीति को भी बदल देता है चुनाव

जनतंत्र में एक विचित्र बात यह है कि चुनाव के मौके पर विचारों और सिद्धांतों के खंभे अचानक हिल उठते हैं। पूरी व्यवस्था ही हिचकोले खाती नजर आने लगती है, हालांकि आमतौर पर चुनाव के बाद सब कुछ पटरी पर आ जाता है। इलेक्शन जब सिर पर हो तब कहना मुश्किल है कि कौन क्या कदम उठा लेगा। चुनाव में तो विदेश नीति तक बदल जाती है। यह कहानी पूरी दुनिया की है। पाकिस्तान में चुनाव होने वाले हैं लिहाजा वहां की नैशनल असेंबली ने अफजल गुरु को फांसी दिए जाने पर एक निंदा प्रस्ताव पास कर दिया, जिसमें यह मांग की गई कि अफजल के शव को उसके परिवार वालों को सौंप दिया जाए। यह प्रस्ताव जमायत-ए-उलेमा-ए -इस्लाम के प्रमुख मौलाना फजलुर्रहमान ने पेश किया था। अब सत्तारूढ़ पीपीपी इस पर कह भी क्या सकती थी! बांग्लादेश में भी चुनाव नजदीक हैं। इसलिए जब पिछले दिनों राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी वहां की यात्रा पर गए तो प्रमुख विपक्षी दल बीएनपी की नेता खालिदा जिया ने उनसे अपनी तय मुलाकात तक टाल दी। असल में खालिदा जिया अपने को भारत विरोधी दिखाकर चुनावी लाभ लेना चाहती हैं। यही कहानी मालदीव की है। वहां सितंबर में प्रेजिडेंट के लिए इलेक्शन होगा। राष्ट्रपति मोहम्मद वहीद अपने मुल्क की भारत से पुरानी दोस्ती को भुलाकर विरोधी रुख अपनाए हुए हैं, क्योंकि उन्हें भी भारत विरोधी ताकतों से लाभ मिलने की उम्मीद है। अब इटली ने जो कुछ किया है, उसके पीछे भी चुनाव ही है। वहां पिछले दिनों हुए चुनाव में किसी को बहुमत नहीं मिल सका है। इसलिए अपने एक जहाज के दो सुरक्षाकर्मियों को वापस भारत भेजकर जनता को नाराज करने का जोखिम वहां की कमजोर सत्ता नहीं ले पा रही। कुछ समय पहले जब अमेरिकी प्रेजिडेंट बराक ओबामा दोबारा चुनाव में उतरे थे, तो आउटसोर्सिंग खत्म किए जाने की बात जोरशोर से कह रहे थे। लेकिन चुनाव जीतते ही इस मामले में उनकी आवाज मंद पड़ गई। वैसे अगले साल भारत में भी चुनाव होंगे। शायद इसीलिए केंद्र सरकार ने भारत-पाकिस्तान हॉकी सीरीज रद्द करने का फैसला किया है।

शह और मात का खेल